डाक टिकटो पर जैन इतिहास
क्रमांक – 34

गोडीजी जैन मंदिर – मुम्बई

— सुरेश जैन

गोडीजी जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ के 108 नामों में से एक है। गोडीजी मंदिर मुम्बई के पायधूनी इलाका में स्थित है, इस जैन मंदिर ने ई. सन् 2012 में अपनी स्थापना का 200 वाँ वर्ष मनाया था। भारत में करीब 12 बड़े गोडीजी पार्श्वनाथ जैन मंदिर हैं परन्तु इन सभी का मूल उद्गम पाकिस्तान का गोडीजी मंदिर है। पाकिस्तान का गोडीजी मंदिर थारपारकर जिले में इस्लामगेट और नगरपारकर के बीच स्थित है। थारपारकर का गोडीजी मंदिर 8 वी शताब्दी ई. पूं. में हुए भगवान् पार्श्वनाथ के नाम से है, एक मान्यता के अनुसार इस की प्रतिमा ई. सन् 1375 में मेघासा नामक सेठ, गुजरात के पाटण शहर से यहाँ लाया था। इस प्रतिमा को ई सन् 1175 में किसी कारण वश दबा दिया गया था, किसी ने बाद में इस को निकाला और सेठ मेघासा ने 500 मुद्राओं में इसे प्राप्त किया था। मेघासा ने मंदिर बनवाया इस में यही मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई तथा गोडी गाँव बसाया था, इस मंदिर का गुम्बद तथा सभी दीवारे पेंटिंगज़ से सजी हुई हैं। अजंता और एलोरा को छोड़ कर भारत के किसी भी मंदिर में इतनी प्राचीन पेंटिंगज़ व भित्तीचित्र आप को कहीं नहीं मिलेंगे गोडीजी पार्श्वनाथ नाम के अधिकतर मंदिरो की मूलनायक मूर्ति गोडी गाँव की ही है। इस मंदिर में कभी 1.5 फीट ऊँची मूलनायक की मूर्ति थी, जिस का अब किसी को कोई पता नहीं है कि मूर्ति कहाँ है, खाली मंदिर पाकिस्तान में खड़ा है। इस गाँव में ई. सन् 1947 में 400 जैनी रहते थे, जो देश के बटवारे के बाद गाँव छोड़ कर भारत आ गये।

खम्भात के एक धनाढ्य व्यापारी श्री मोती शाह ने गृहजिनालय के रूप में फोर्ट एरिया – मुम्बई में ई. सन् 1812 में गोडीजी पार्श्वनाथ

मंदिर बनवाया था। यह सारा मंदिर लकड़ी का बना हुआ था। मंदिर के लिए मूर्ति हमीरपुर - जिला सिरोही, राजस्थान से लाई गई जो वहाँ गोडी गाँव से आई थी। सन् 1859 में फोर्ट एरिया - मुम्बई में भयंकर आग लगने फोर्ट एरिया के घरों व मंदिर को भारी क्षति पहुँची, आग 72 घंटे तक लगी रही व बड़ा भारी नुकसान हुआ। जो जैन परिवार फोर्ट एरिया में रहते थे उन में से अधिकतम पायधूनी ऐरिया - मुम्बई मे रहने के लिए स्थानान्तरित हो गये। इस के बाद गोडी जी पार्श्वनाथ की मूर्ति को भी फोर्ट ऐरिया से लाकर पायधूनी में स्थापित करने का निर्णय लिया गया सन् 1868 में एक सुन्दर मंदिर पायधूनी में निर्माण कर उस में गोडीजी पार्श्वनाथ की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया गया। गोडीजी का जो मंदिर इस समय पायधूनी में बना हुआ है वह करीब 50 वर्ष पहले पूरा का पूरा बनवाया गया था। इस शिखरों वाले तीन मंजिला इस मंदिर का मकराना के संगमरमर से पुनर्निर्माण किया गया, इस मंदिर में 226 प्रत्यक्ष स्तम्भ हैं, 16 आराधना कक्ष, 155 अमूल्य धातु की मूर्तियां तथा 83 संगमरमर की मूर्तियां हैं। मध्य में स्थित गोलाकार गुम्बद बिना किसी सहारे के खड़ा है। मंदिर का मुख्य आकर्षण इस मंदिर में रत्नी गोडीजी पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति है। मंदिर में विभिन्न भाषाओं के प्राचीन एंव आधुनिक साहित्य का विशाल पुस्तकालय है। इस में हस्तलिखित पाडुलिपियां, संस्कृत, अर्धमागधी, प्राकृत, जैसी प्राचीन भाषाओं का साहित्य शामिल है।

मुम्बई में गोडीजी पार्श्वनाथ मंदिर की स्थापना की 200 वी वर्ष गाँठ का महोत्सव भी एक यादगार है, बड़ी धूम धाम तथा अभूतपूर्व ढंग से मनाया गया यह महोत्सव 15 अप्रेल 2012 से 12 मई 2012 तक चला। इस महोत्सव में सम्मलित होने के लिए एक लाख पैंतीस हज़ार परिवारो को आदाम युक्त मिठाई सहित निमंत्रण पत्र भेजे गये। गोडीजी मंदिर पायधूनी के चारो ओर

रहने वाले 10 हज़ार परिवारों को लड्डू बाँटे गये। 30 हज़ार किलो आटा, 25 हज़ार किलो बासमती चावल, 10 हज़ार किलो छिलके वाली हरी दाल, 16 हज़ार किलो पीली दाल, 16 हज़ार किलो ढोकले का आटा, 3 हज़ार किलो खाने का तेल, 15 सौ टन आमों का जूस, अन्य सामान के इलावा सैकड़ों किलो नमक, मिर्च, मसाले इस्तेमाल किये गये, 125 भोजन बनाने वाले बावर्ची व उन के 20 हज़ार सहायक तथा वर्करों ने काम किया, 8 लाख 50 हज़ार व्यक्तियों को भोजन परोसा गया (यह भोजन मुम्बई स्थित नगर के प्रत्येक जैन मंदिर में परोसा गया) 280 साधुओं की उपस्थिति में आचार्य श्री पदम सागर सूरि जी म. ने संचालन किया तथा प्राचीन शास्त्रों के चित्रों वाले 5 ग्रंथों का प्रकाशन हुआ।

गोडी जी पार्श्वनाथ जैन मंदिर पर डाक टिकट

एक स्मारक डाक टिकट जिस पर गोडीजी मंदिर, पायधूनी, मुम्बई का चित्र बना हुआ है इस का 17 अप्रैल 2012 को भारत सरकार के संचार मंत्री श्री मिलिंद देवरा ने मुम्बई में विमोचन किया था। भारत सरकार के डाक विभाग ने इस मंदिर की 200वीं वर्षगाँठ के उत्सव की खुशी में एक 500 पैसे मूल्य का डाक टिकट जारी किया था। इस यादगारी डाक टिकट को सलेटी, नीले तथा काले रँगों में बिना जल चिन्ह वाले कागज़ पर फोटो ग्रव्योर मुद्रण प्रक्रिया से भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक से चार लाख संख्या में छपवा कर जारी किया गया था। डाक टिकट के नीचे अंग्रेजी तथा हिन्दी में गोडीजी मंदिर, मुम्बई लिखा है। इस डाक टिकट का विवरण इंगलेंड से छपने वाले स्टेनले गिब्बंस केटालाग में SG नम्बर 2756 पर दिया गया है।

डाक टिकटो पर जैन इतिहास
क्रमांक - 35

प्रसिद्ध पत्रकार श्री कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' (कोठारी - जैन)

— सुरेश जैन

कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' का जन्म एक साधारण जैन परिवार में 20 मार्च 1926 को राजस्थान के टोंक जिले की तहसील मालपुरा के गाँव सोडा में हुआ था। इनका गोत्र कोठारी तथा धर्म जैनधा। पढ़ाई के बाद शीघ्र ही इन्हों ने आजीविका की खातिर पत्रकारिता जीवन की शुरुआत कर दी व एक समाचार पत्र कार्यलय में कर्मचारी के रूप में नौकरी कर ली। अपने कार्य करने के दौरान इन्हों ने वेदो एंव उपनिषदों को पढ़ना शुरु कर दिया।

7 मार्च 1956 को इन्हों ने एक निजी संध्या समाचार पत्र के रूप में राजस्थान पत्रिका की शुरुआत की और 1960 में यह दैनिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा। बहुत जल्द ही इसका नाम हिन्दी समाचार पत्रों में अग्रणी बन गया तथा इसे दैनिक समाचार पत्रों में व्यापक रूप से पढ़े जाने वाला मशहूर हिन्दी समाचार पत्र का स्थान मिला। कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' को इतनी सफलता मिली कि इन की राजस्थान पत्रिका ने धीरे धीरे देश के भिन्न - भिन्न 7 स्थानो जयपुर, जोधपुर, कोटा, बीकानेर, सिकर, उदयपुर, श्री गंगानगर, भीलवाड़ा, अलवर, अजमेर, बँसवाड़ा, पाली, बंगलोर, अहमदाबाद, सूरत, चन्नई, कोलकत्ता से प्रकाशित होने लगा।

कुछ समय बाद इस पत्रिका समूह ने मध्यप्रदेश में अपने कदम रखे तथा प्रथम वर्ष में ही इसे उमीद से बहुत अधिक कामयाबी मिली तथा यह मध्यप्रदेश के पाँच शहरो भोपाल, इन्दौर, उज्जैन, रतलाम तथा जबलपुर से प्रकाशित होने लगा।

राजस्थान पत्रिका के संस्थापक श्री कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' सर्वश्रेष्ठ पत्रकार होने के इलावा एक कवि, वेदो के विद्वान, विचारक एंव दार्शनिक थे। वेदों एंव उपनिषदों में निहित प्राचीन सांस्कृतिक

विरासत से वे गहराई से प्रभावित थे। इन के मार्ग दर्शन में वेदों पर साठ पुस्तकें प्रकाशित हुई। इन्होंने अपने नाम के साथ "कुलिश" उपनाम लगा लिया। वह एक साहसी पत्रकार थे, उन्होंने विचारोत्तेजक एवं वस्तुनिष्ठ लेखों के माध्यम से जनसाधारण में जागरूकता पैदा करने का निरंतर प्रयास किया। इन्होंने हिन्दी में अनेक साहित्यिक रचनाएँ दी। "सात सैकड़ा" नामक सरल भाषा में लिखे गए उन के कविता संग्रह में वैदिक दृष्टिकोण से विश्व की प्रकृति एवं रहस्य को स्पष्ट किया गया है। कुछ समय के बाद कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' ने राजस्थान पत्रिका में सामाजिक विषयों पर "पोलमपोल" नाम शीर्षक से अत्यंत लोकप्रिय स्तंभ का लेखन शुरू किया। उनके साहित्यिक कार्यों में "अमेरिका एक विहंगम दृष्टि" तथा "मैं देखता चला गया" की बड़े व्यापक स्तर पर प्रशँसा की गई। इन्हों ने वेदों पर दो पुस्तकें "वेद विज्ञान" तथा "वेद - विद्या प्रवेशिका" लिखी, चारों वेदों पर इन की पुस्तक जिस का शीर्षक है "शब्द वेद" एक अनूठी एवं असाधारण रचना है।

राजस्थान पत्रिका से 30 मार्च 1986 को 60 वर्ष की आयु में कर्पूर चन्द्र "कुलिश" सेवा निवृत हो गये। इन को पत्रकारिता में योगदान के लिए अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन्हें वर्ष 1990 के लिए भारतीय भाषा समाचार पत्र श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए बी. डी. गोयनका फाउंडेशन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन्हें वर्ष 2000 में गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार दिया गया। 17 जनवरी 2006 को कर्पूर चन्द्र "कुलिश" का 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' के चित्र वाला डाक टिकट तथा कुछ रोचक तथ्य।

कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' के चित्र वाली डाक टिकट को सन् 2011 में जारी करने का निर्णय लिया गया परन्तु जारी नहीं हुई, फिर मार्च 2012 को जारी करने की घोषणा की गई परन्तु डाक टिकट जारी करने का प्रोग्राम स्थागित कर दिया गया, आखिर कार 16 मई 2012 को इसे जारी कर दिया गया।

राजस्थान पत्रिका आम तौर पर जो भी डाक टिकट जारी होती है उस के बारे में अपने समाचार पत्र में व्यापक रूप से खबर छापता है। कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' पर डाक टिकट जारी करने की खबर 16 मई 2012 को आल इण्डिया रेडियो - जयपुर ने भी प्रसारित की थी, परन्तु सब से रोचक पहलू यह है कि राजस्थान पत्रिका के संस्थापक के चित्र वाली डाक टिकट जारी की गई परन्तु इस समाचार पत्र के किसी भी स्थान से प्रकाशित होने वाले किसी भी अंक में इस डाक टिकट के जारी होने का समाचार नहीं छापा गया, न ही इस डाक टिकट का चित्र किसी अंक में छापा गया। ऐसा कहा जाता है कि राजस्थान पत्रिका समूह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि देश के राष्ट्रपति इस डाक टिकट को जारी करें परन्तु डाक विभाग ने इस बात को कोई महत्व नहीं दिया। यहाँ तक कि डाक टिकट को जारी करने के लिए कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' के बेटे गुलाब कोठारी व परिवार के अन्य सदस्यों तथा राजस्थान पत्रिका के अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों ने कहीं भी डाक टिकट विमोचन समारोह में भाग नहीं लिया तथा राजस्थान पत्रिका समूह ने अपने समस्त कार्यालयों को निर्देश दिया कि इस डाक टिकट को जारी करने का समाचार न छापा जाये। कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' जैन थे अतः उदयपुर की जैन समाज ने इस डाक टिकट को जारी करने का समारोह 16 मई 2012 को आयोजित किया था, इस समारोह में उदयपुर के जैन समाज के सदस्यों तथा उदयपुर में विराजमान जैन संतों ने इस समारोह में भाग लिया था परन्तु यह समाचार भी राजस्थान पत्रिका ने अपने समाचार पत्र के किसी अंक में प्रकाशित नहीं किया।

कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' के चित्र वाली एक बहुरँगी डाक टिकट को भारत सरकार के डाक विभाग ने 16 मई 2012 को 500 पैसे मुल्य में वेट ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया से प्रतिभूति मुद्रणालय हैदराबाद से छपवा कर उलारव 50 हज़ार संख्या में जारी किया था, प्रस्तावक राजस्थान पत्रिका समूह ने यह डाक टिकट 50 हज़ार संख्या में लिए थे। डाक टिकट के बाईं ओर कर्पूर चन्द्र 'कुलिश' का चित्र छपा है तथा दांयी ओर "राजस्थान पत्रिका" समाचार पत्र का मुखपृष्ठ व पृष्ठभूमि पर समाचार छपे हुए दिखाये गये हैं। पत्रिका की एक साईड पर लाल रँग में इनकी वेदो पर छापी गई पुस्तक को दर्शाया गया है। डाक टिकट के ऊपर 500 (मुल्य) तथा भारत - INDIA लिखा है, चित्र के नीचे हिन्दी तथा इंगलिश में कर्पूर चन्द्र "कुलिश" लिखा है।

डाक टिकटो पर जैन इतिहास -1
क्रमांक - 36

फिल्म प्रोडयुसर श्री ताराचन्द बड़जात्या (जैन)

- सुरेश जैन

भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष 3 मई 2013 को पूर्ण हुए थे। भारतीय सिनेमा के सब से सम्मानित व्यक्ति दादा साहेब फाल्के की पूर्ण फीचर फिल्म राजा हरिश्चन्द्र का 3 मई 1913 को प्रदर्शन हुआ था, जिस ने सिनेमा के इतिहास में एक क्रांती के युग को जन्म दिया था। उन्होंने मनोरंजन के साथ एक सशक्त माध्यम भी प्रदान किया, जिस ने पूरे देश को सामाजिक सरोकार व संस्कृति को दिशा प्रदान की। भारतीय सिनेमा के इतिहास में पहली बोलती फिल्म "आलम आरा" का प्रदर्शन अगली उल्लेखनीय घटना थी, यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मैजेस्टिक सिनेमा, मुम्बई में प्रदर्शित हुई थी, उस समय भीड़ का यह आलम था कि पुलिस को भीड़ नियंत्रित करने के लिए बुलाना पड़ा।

1940 का दशक युद्ध तथा उथल-पुथल का दशक था इस के बावजूद भारतीय सिनेमा ने अच्छी प्रगति की, इसी दशक में 15 अगस्त 1947 को ताराचन्द बड़जात्या (जैन) ने अपना राजश्री पिक्चरज़ प्रा. लि. की स्थापना की जो कि फिल्मो के वितरक के रूप में उभरा। 1950 का दशक फिल्म संगीत का स्वर्णिम युग था, देश के बड़े बड़े संगीतकार इसी दशक में उभरे तथा निर्माताओं द्वारा सामाजिक विषयो पर फिल्मों का निर्माण किया गया। 1960 के दशक में भी यह नई प्रवृति जारी रही, ताराचन्द बड़जात्या ने इसी दशक में राजश्री प्रोडक्शन प्रा. लि. निर्माण डविज़न की 1962 में शुरुआत की जिस ने प्रथम हिन्दी फिल्म "आरती" बनाई जिसे राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी सफलता मिली, 1970 के दशक में भारतीय सिनेमा में मसाला फिल्मों का जन्म हुआ, जिस में अत्याधिक आकर्षण और पूर्ण मनोरंजन था, 1980 के दशक में समानंतर सिनेमा के दौर में महिला फिल्म निर्माताओं का उदय हुआ, 1990 का दशक मिश्रित फिल्मों का दौर रहा जिस में रोमांटिक, एकशन और कॉमेडी फिल्मों का निर्माण

हुआ। डॉलबी, डिजिटल, ध्वनिप्रभाव, उन्नत विशिष्ट प्रभाव के साथ नई तकनीक और आधुनिक कोरियोग्राफी ने रुपहले पर्दे पर गुणवत्ता से उल्लेखनीय सुधार हुआ 2000 के दशक में प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों और व्यवसायिक प्रदर्शनों के अवसर के साथ भारतीय सिनेमा ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। 2010 का दशक रुपहले पर्दे के लिए अपने साथ भारतीय सिनेमा के 100 वर्षों के पूर्ण होने का शुभ समाचार लाया इसी दशक में 3 मई, 2013 को भारत सरकार के डाक विभाग ने 50 डाक टिकटों के मिनिएचर शीट जारी किये थे, जिन में 18 डाक टिकटों पर दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेताओं को चित्रित किया गया तथा बाकी 32 डाक टिकटों पर सिनेमा के विभिन्न क्षेत्रों की हस्तियों को चित्रित किया गया, यह डाक विभाग के इतिहास में पहली बार हुआ है कि इतने व्यापक स्तर पर एक ही समय पर 50 डाक टिकटों को जारी किया गया। इन्हीं डाक टिकटों में प्रसिद्ध फिल्म प्रोड्यूसर श्री ताराचन्द बड़जात्या (जैन) को भी एक डाक टिकट पर चित्रित किया गया है। ताराचन्द बड़जात्या का जन्म एक मारवाड़ी जैन परिवार में 10 मई 1914 को कूचामान शहर (राजस्थान) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने कलकत्ता युनिवर्सिटी के विद्यासागर कालेज से ग्रेजुएशन की और मात्र 19 वर्ष की आयु में भारतीय सिनेमा जगत से जुड़ गये, जहां इन्होंने बिना कोई पारिश्रमिक लिए परिक्षण ग्रहण किया। इसके बाद वे एक कामयाब फिल्म प्रोड्यूसर बन गये। ताराचन्द बड़जात्या जिन्होंने 1947 में राजश्री की शुरुआत की थी वह फिल्म जगत में 6 दशकों तक बड़ी कामयाबी से छाये रहे। इन के परिश्रम ने राजश्री को फिल्म वितरण, तथा निर्माण के क्षेत्र में प्रमुख स्थान दिलाया, राजश्री प्रोडक्शन की रंगमंडली ने 50 के करीब फिल्में भारतीय सिनेमा को दी, एक टेलिविजन का व्यापक प्रसार तंत्र दिया तथा निर्यात के क्षेत्र में भी बढ़ चढ़ कर पहचान बनाई। ताराचन्द बड़जात्या दक्षिण के नामी प्रोड्यूसरों को भारतीय सिनेमा में कदम रखने में बड़े सहायक सिद्ध हुए तथा उन की बहुत सी फिल्मों

का नित्तरण कार्य अपने हाथों में लिया।
राजश्री प्रोडक्शन ने अपनी दूसरी फिल्म "दोस्ती" बनाई जिस में एक भी बड़े अभिनेता या अभिनेत्री को नहीं लिया, लेकिन इस फिल्म ने बाक्स आफिस पर धूम मचा दी, इस फिल्म को 1964 में फिल्म फेयर का सर्वोच्च अवार्ड दिया गया। इन्हों ने ऊँचे आदर्श की मान्यप्राप्त पारिवारिक व सामाजिक फिल्में बनाई जिन में नाच संगीत के मिश्रण से लोगों का मनोरंजन किया गया। इन की बनाई हुई एक के बाद एक सफलतम फिल्में आई जिन में जीवन-मृत्यु, उपहार, पिंजरा का घर, सौदागर, गीत गाता चल, तपस्या, चित्तचोर, दुल्हन वही जो पिया मन भाये, अखियों के झरोखे से, सावन को आने दो, तराना, नदिया के पार, सारांश आदि की लम्बी लिस्ट है।
इन के तीनों बेटों अजीत, कमल तथा राज ने भी राजश्री में अपने पिता के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम करना शुरू कर दिया तथा राजश्री को और ऊँचाईयों पर ले गये। ताराचन्द बड़जात्या ने अपने पौत्र सूरज में बहुत बड़ी प्रतिभा को देखा, जो स्वाभाविक तौर पर सदा ही आगे की सोचता, उसे इन्हों ने मात्र 24 वर्ष की आयु में ही प्रोत्साहित किया कि वह राजश्री के बैनर के नीचे स्वतंत्र रूप से फिल्म का निर्देशन करे सूरज ने अपनी पहली फिल्म "मैंने प्यार किया" का इकेले ही निर्देशन किया तथा ताराचन्द बड़जात्या इस फिल्म के प्रोड्यूसर थे। यह फिल्म बाक्स आफिस पर बड़ी कामयाब साबित हुई तथा इसे 1989 में फिल्म फेयर का बेहतरीन फिल्म होने का अवार्ड मिला, इस फिल्म की कामयाबी से सूरज इतना उत्साहित हुआ कि उस ने अपनी अगली फिल्म "हम आप के हैं कौन" बना कर भारतीय सिनेमा उद्योग में कामयाबी के झंडे गाड़ दिये इस फिल्म को चहूँ ओर से सराहा गया और यह भारतीय सिनेमा के इतिहास में तथा विदेशों में बड़ी सफल फिल्म साबित हुई।
भारत सरकार ने ताराचन्द बड़जात्या को फिल्मों पर बनी कमेटी का सदस्य नियुक्त किया इस कमेटी की चेयरपर्सन श्री मति इंदिरा गांधी थी।

दूसरी बार भारत सरकार ने इन्हें "वर्किंग ग्रुप आफ फिल्मस" का सदस्य नियुक्त किया, जिस ग्रुप ने भारत की पार्लियामेन्ट को फिल्मो के बारे में अपनी रिपोर्ट पेश की थी।

श्री ताराचन्द बड़जात्या (जैन) का 21 सितम्बर 1992 को 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

ताराचन्द बड़जात्या पर डाक टिकट

भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पूर्ण होने पर 8 टिकटो वाली मिनिएचर शीट में एक बहुरंगी डाक टिकट पर ताराचन्द बड़जात्या का चित्र छपा है, डाक टिकट का मुल्य 500 पैसे है, मिनिएचरशीट को 3 मई 2013 को भारत सरकार के डाक विभाग ने लेट ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया से सिक्योरटी प्रिंटिग प्रेस, हैदराबाद से छपवा कर जारी किया था। प्रत्येक डाक टिकट को 8 लाख 10 हजार संख्या में छापा गया था। इन मिनिएचर शीटो का विमोचन राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखजी ने किया था।

डाक टिकट पर ताराचन्द बड़जात्या को हाथ में कलम ले कर अपने कार्यालय में एक कुर्सी पर बैठ कर काम करते हुए दिखाया गया है, डाक टिकट के ऊपर 500 (मुल्य) तथा भारत - INDIA लिखा है, नीचे इंगलिश तथा हिन्दी में ताराचन्द बड़जात्या लिखा है। इस पूरी श्रंखला में जो डाक टिकट जारी किये गये हैं उन सब पर भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष का LOGO छपा हुआ है।

क्रमांक - 37

आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज

— सुरेश जैन

दिगम्बर जैन समाज के आचार्य श्री ज्ञान सागर जी म. का जन्म 2 जून 1891 को राणोली ग्राम (जिला सीकर-राजस्थान) में दिगम्बर जैन परिवार में श्री चतुर्भुज ढाबड़ा एवं माता घृतावरी देवी के घर पर हुआ था, बालक का नाम भूरामल रखा गया। इन की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय में हुई। साधनों के अभाव में आप आगे विद्याध्ययन न कर अपने बड़े भाई के साथ नौकरी हेतु गयाजी (बिहार) आ गये। वहाँ 13-14 वर्ष की आयु में एक जैन सेठ की दुकान पर आजीविका हेतु कार्य करते रहे। लेकिन इन का मन आगे पढ़ने के लिए छटपटा रहा था। संयोगवश स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी के छात्र किसी समारोह में भाग लेने हेतु गयाजी (बिहार) आये। उन के प्रभावपूर्ण कार्यक्रमों को देख कर युवा भूरामल के मन में विद्या प्राप्ति हेतु वाराणसी जाने के हुए। विद्याअध्ययन के प्रति इन की तीव्र भावना एवं दृढ़ता देख कर इन के बड़े भ्राता ने 15 वर्ष की आयु में इन को वाराणसी जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

भूरामल जी कठिन परिश्रमी अध्यवसायी, स्वावलम्बी, एवं निष्ठावान थे, वाराणसी में पूर्ण निष्ठा के साथ विद्याध्ययन किया और संस्कृत एवं जैन सिद्धान्त का गहन अध्ययन कर स्याद्वाद महाविद्यालय से शास्त्री परीक्षा पास की। आप ने जैन साहित्य, न्याय और व्याकरण को पुनः जीवित करने का भी दृढ़ संकल्प लिया, कई जैन एवं जैनेत्तर विद्वानों से जैन वाङ्मय की शिक्षा प्राप्त की। वाराणसी में ही आप ने जैनाचार्यों द्वारा लिखित न्याय, व्याकरण, साहित्य, सिद्धान्त एवं अध्यात्म विषयों के अनेक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। वाराणसी में अध्ययन करते हुए ही संकल्प ले लिया कि आजीवन ब्रह्मचारी रह कर साहित्य

और जिनवाणी की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर देंगे। वे अपनी संपूर्ण युवावस्था में त्याग के पथ का अनुगमन करते रहे तथा निरंतर साहित्यक कार्यों में व्यस्त रहे। समय के साथ-साथ वे प्राचीन जैन साहित्य के सर्वश्रेष्ठ विद्वान के रूप में उभरे और उन्होंने सामान्य जनता के लिए इस की वाक्पटुता से व्याख्या की तथा जीवन के 50 वर्ष साहित्य साधना में व्यतीत कर पूर्ण पांडित्य प्राप्त कर लिया।

भूरामल जी ने 52 वर्ष की आयु में अजमेर नगर में आचार्य वीर सागर जी म. से सप्तम प्रतिमा के व्रत अंगीकार किये, 54 वर्ष की आयु में पूर्णरूपेण गृहत्याग कर आत्मकल्याण हेतु जैन सिद्धान्त के गहन अध्ययन में लग गये, सन् 1955 में 60 वर्ष की आयु में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की, इन को नया नाम मिला क्षुल्लक ज्ञान भूषण जी, इन की क्षुल्लक दीक्षा गुरु थे आचार्य वीरसागर जी म. दो वर्षों तक संयम पथ पर चलने के बाद सन् 1957 में ऐलक दीक्षा ग्रहण की और दो वर्षों तक कठोर संयम में रहकर इन्हों
22 ने 20 जून 1959 को मुनि दीक्षा ग्रहण की, इन की दीक्षा श्री दिगम्बर जैन क्षेत्र खानियाँजी (जयपुर - राजस्थान) में हुई तथा मुनि दीक्षा गुरु बने आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज और ज्ञान भूषण जी को नया नाम मिला श्री ज्ञान सागर जी। दस वर्षों तक कठिन तपस्या, स्वाध्याय एवं संयम पालने के बाद 7 फरवरी 1969 को नसीराबाद (राजस्थान) में इन्हें आचार्य पदवी का उन्नत स्थान प्रदान किया गया।

आचार्य श्री ज्ञान सागर जी ने जैन साहित्य के पुनरुद्धार एवं इसे समृद्ध बनाने में श्रेष्ठ योगदान दिया, इन्होंने संस्कृत में नौ पुस्तकें लिखी जिन में से चार महाकाव्यों को व्यापक रूप से पढ़ा जाता है एवं तीन अन्य जैन ग्रंथ लिखे, वह भी तब लिखे जब संस्कृत भाषा में कार्य करना बड़ा कठिन था। इन की लिखी हुई संस्कृत की रचनाओं पर 30 शोधकर्ताओं ने कार्य करके पी. एच. डी की डिग्री प्राप्त की तथा 300 विद्वानों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। जब संस्कृत

भाषा अप्रचलित थी तथा प्रायः लुप्त के कगार पर थी तब इन्होंने संस्कृत में साहित्यिक रचनाएं देश के सामने रखी। इन की रचनाओं ने आधुनिक संस्कृत के विद्वानों को सदा अचम्भे में डाला है, वे सदैव यह सोचते हैं कि क्या ऐसा आश्चर्यजनक कार्य भी उस समय में हो सकता था। दिग्गज विद्वान तो इन्हें इस काल का कालीदास और माघकवि भी कहते हैं। इन की हिन्दी में लिखी हुई भाग्योदय, कर्तव्य, पथ-प्रदर्शन, मानवधर्म एवं विवेकोदय कुछ श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियां हैं। इन्होंने लोकप्रिय हिन्दी कविता "ऋषभावतार" की रचना की जो "आदिपुराण" में दिए अनुसार प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव जी के जीवन से प्ररित थी।

आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज ने अपने अनुयायियों को आनन्द की प्राप्ति के लिए अपनी इच्छाओं को सीमित रखने एवं संतुष्ट रहने की शिक्षा दी, उन्होंने अपनी कथनी पर निस्वार्थ रूप से आचरण किया। आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज ने अपना आचार्य पद अपने अनुगामी श्री विद्यासागर जी महाराज को २२ नवम्बर १९७२ को अर्पित कर दिया तथा 1 जून १९७३ को ८२ वर्ष की आयु में नसीराबाद (राजस्थान) में आचार्य श्री ज्ञान सागर जी म. ने समाधि में इस नश्वर शरीर का त्याग कर आत्मलीन हो गये। उन का साहित्य एवं उन की शिक्षा उन के अनुयायियों के पथ प्रबुद्ध करती रहेगी।

आचार्य श्री ज्ञान सागर जी पर डाक टिकट तथा कुछ रोचक तथ्य।

यह पहली डाक टिकट है जो दिगम्बर जैन समाज के किसी संत पर जारी हुई है। इस डाक टिकट को मार्च २०१३ में जारी करना था परन्तु जो डाक टिकट छापे गये थे, उन पर आचार्य श्री ज्ञान सागर जी का अधूरा पोट्रेट चित्र छपा था और दिगम्बर जैन संत के अनिवार्य उपकरण "मोरपंख पिछी" तथा "कमण्डल" नहीं छपे थे। (डाक टिकट केवल एक नागा साधु का चित्र बयान करती थी) दिगम्बर जैन समाज के विरोध के कारण भारत सरकार के डाक

विभाग ने पहली बार कोई छपा हुआ डाक टिकट रद्द कर के ठीक डिज़ाईन वाला दूसरा डाक टिकट छापा तथा इस को नवम्बर २०१३ में जारी करने की तिथी निर्धारित की, परन्तु डाक टिकट तथा सारा मैटिरियल अगस्त - २०१३ में तैयार हो गया इस कारण भारत सरकार के डाक विभाग ने इस डाक टिकट को १० सितम्बर २०१३ को जारी कर दिया। इस डाक टिकट को जारी करने का मुख्य समारोह श्री रतन लाल कंवर लाल पाटनी फाउण्डेशन ट्रस्ट (R.K. MARBLE) द्वारा किशनगढ़ (राजस्थान) में आयोजित किया गया, जिस में केन्द्रीय कॉरपोरेट राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट ने इस डाक टिकट का विमोचन किया। इस समारोह में ले. कर्नल डी. के. एस. चौहान मुख्य डाक महाध्यक्ष - राजस्थान परिमंडल ने विशेष रूप से भाग लिया तथा डाक टिकट व अन्य सामग्री प्रस्तुत की।

डाक टिकट का डिज़ाईन -

डाक टिकट में आचार्य श्री ज्ञान सागर जी को पद्मासन की मुद्रा में ध्यान लगा कर एक पेड़ के आगे बैठे हुए दर्शाया गया है। इन के ठीक आगे "मोरपंख पिच्छी" पड़ी हुई है तथा इन की दायीं ओर कमण्डल पड़ा है। ऊपर भारत - INDIA तथा ५०० (मुल्य) लिखा है। इन के दायी ओर सफेद बार्डर पर इंगलिश तथा नीचे सफेद बार्डर पर हिन्दी में आचार्य ज्ञान सागर लिखा है, इस बहुरँगी डाक टिकट को भारत सरकार के डाक विभाग ने वेट ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया द्वारा स्कयोरटी प्रिंटिंग प्रेस, हैदराबाद से ५ लाख ६० हज़ार संख्या में छपवा कर १० सितम्बर २०१३ को जारी किया था। इस में से प्रस्तावक दिगम्बर जैन समाज ने एक लाख पचास हज़ार डाक टिकट लिए थे।

आभार - अजमेर निवासी श्री निहाल चन्द्र जी जैन द्वारा R.K. Marble, किशनगढ़ ने इस लेख के लिए मुझे कुछ तथ्यों से अवगत करवाया है। मैं इस सहयोग के लिए उन का धन्यवाद करता हूँ।

क्रमांक - 38

19 वीं सदी के फोटोग्राफर लाला दीन दयाल जी (जैन)

— सुरेश जैन

नवम्बर - 2006 में डाक टिकट जारी होने के समय किसी भी स्रोत से यह पता नहीं चला कि लाला दीन दयाल जी किस धर्म से सम्बंधित हैं। जैनईज़म फिलेटली ग्रुप के प्रधान श्री सुधीर जैन (सतना - एम.पी.) के माध्यम से 28 अक्टूबर 2012 को सूचना मिली कि लाला दीन दयाल जी के पड़दोहत्र दामाद श्री एन.के. जैन मुम्बई निवासी ने सूचित किया है कि लाला दीन दयाल जी दिगम्बर जैन थे। इस सूचना के उपरांत इस डाक टिकट को जैन व्यक्तित्व के रूप में अपने लेख में शामिल कर रहा हूँ।

लाला दीन दयाल का जन्म ई. सन् 1844 को एक सम्पन्न जैन परिवार में मेरठ के निकट सरधना (यू.पी.) में हुआ था। इन्हों ने स्कूल की शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत थॉमसन्स सिविल इंजीनियरिंग कालेज रुड़की से टेक्निकल शिक्षा ग्रहण की और इंदौर में पी.डब्लू.डी विभाग में हेड एस्टीमेटर तथा ड्राफ्ट्समैन बन गये। वहाँ कार्य करते हुए उन की फोटोग्राफी के प्रति रुचि उत्पन्न हुई, जो जनून की हद तक पहुँच गई। इंदौर के महाराजा तुकोजी राव होलकर-II तथा मध्य भारत के गवर्नर-जनरल के एजेंट सर हेनरी डैली ने इन्हें प्रोत्साहित किया कि वह इंदौर में अपना स्टुडियो खोल लें। ई. सन् 1875 में लाला दीन दयाल को वेल्स के राजकुमार की शाही यात्रा के दौरान फोटोग्राफी करने का कार्य सौंपा गया। ई सन् 1882-83 में तत्कालीन एजेंट सर लेपेल ग्रिफिन इन को अपने मध्य भारत के भ्रमण पर साथ ले गये जहाँ इन्हों ने ग्वालियर, खजुराहो, रीवा, सांची आदि के महलो और किलो की तथा सोनागिर जैन मंदिर व अन्य मंदिरो की 84 तस्वीरों को ऑटोटाइप कार्बन प्रणाली से बेहतरीन ढंग से पुनः विकसित कर सर लेपल ग्रिफिन की "Famous Monuments of Central India" संकलन हेतु तैयार किया

लाला दीनदयाल पर डाकटिकट -

भारतवर्ष में फोटोग्राफी के अग्रगामी लाला दीनदयाल की मृत्यु के 100 वर्ष बाद उन के चित्र वाला एक डाक टिकट भारत सरकार के डाक विभाग ने 11 नवम्बर 2006 को जारी किया था, इस मल्टीकलर डाक टिकट का मुल्य 500 पैसे है तथा इसे चार लाख संख्या में छापा गया था। डाक टिकट के बीच में एक गोले के अंन्दर इन का चित्र छापा गया है तथा गोले के बाहिर चारो ओर इन की खीचीं हुई कुछ तस्वीरों के चित्र हैं, डाक टिकट के ऊपर भारत - INDIA लिखा है नीचे 500 मुल्य व हिन्दी तथा इंगलिश में लाला दीनदयाल लिखा है। इस डाक टिकट को उस समय के केन्द्रीय खनन राज्य मंत्री टी. सुब्रामी रेड्डी तथा आंध्रा प्रदेश सर्कल के चीफ पोस्ट मास्टर जनरल यशोदरा मेनन ने हैदराबाद में 11 नवम्बर 2006 को एक भव्य समारोह में विमोचन किया था। इस डाक टिकट का विवरण इंगलैंड से छपने वाले स्टेनले गिब्बंस के टालाग में S.G नम्बर 2222 पर तथा कामनवेल्थ देशो के के टालाग में नम्बर 2359 पर दिया गया है।

1885 में लार्ड डफरिन ने उन को सम्मानित किया व उन्हें महामहिम वाइसॅराय भवन के फोटोग्राफर के तौर पर नियुक्त कर दिया, जहाँ इन को वाइसॅराय लार्ड डफरिन तथा लेडी डफरिन की तस्वीरें लेनेका अवसर मिला। बाद में आने वाले वाइसॅराय अर्ल ऐलगिन तथा ड्यूक आफ कनोट के दरबार में भी रहे। ई. सन् 1887 में लाला दीन दयाल को विशेष सम्मान मिला इन्हें शाही फरमान जारी कर के साम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया का फोटोग्राफर नियुक्त किया गया, इन को अनगणित संख्या में पुरस्कार प्रदान किये गये, इन्हों ने जल्द ही सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे कर निजी तौर पर फोटोग्राफी करने लगे, इन्होंने अपने फोटोग्राफस की भारत में जयपुर, पूना और कलकत्ता में प्रदर्शनियां लगाई व अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। विदेशों में भी प्रदर्शनी लगाई शिकागो में इन्हें वर्ल्ड कोलंबियन एक्सपोजिशन में विशेष पुरस्कार दिया गया।

इन की ख्याति दिनो-दिन बढ़ने लगी 1896 में इन्हों ने बाम्बे के अन्दर अपना एक बहुत बड़ा फोटोग्राफी का स्टूडियो स्थापित कर दिया, जिसे भारतीयो तथा अंग्रेजो ने संरक्षण दिया तथा इन के नियमित ग्राहक बन गये। निज़ाम हैदराबाद इन के बाम्बो स्टूडियों में विशेष तौर पर आये तथा इन को सिकंदराबाद में स्टूडियो स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया। लाला दीन दयाल ने नवाब की बात मान कर एक बड़ा सुन्दर तथा विशाल स्टूडियो सिकंदराबाद में भी स्थापित कर दिया। निज़ाम महबूब अली पाशा-VI की शादी, इन के शिकार पर जाने तथा विदेशी शाही महमानो के सिकंदराबाद आने पर उन के फोटो लाला दीन दयाल ने खींचे, नवाब ने इन को "राजा" मुसव्विर जंग की उपाधि से विभूषित किया। इस के बाद इन को राजा दीन दयाल के नाम से पुकाराजाने लगा। राजा दीन दयाल ने कई ब्रिटिश उच्च पदाधिकारीयों, मिलीट्री के युद्ध अभ्यासो की तथा बादशाह जार्ज पंचम जो उस समय प्रिंस आफ वेलज़ थे इन सब के चित्र लिये। निज़ाम-VI इन को 1903 में होने वाले दिल्ली दरबार में भी अपने साथ ले कर गये थे इस दिल्ली दरबार में भारत की

रियासतो के शाही घरानो के राजा-महाराजा - नवाब आदि सम्मलित हुए थे उन का प्रिंस आफ वेलज़ के साथ जो ग्रुप फोटो लिया गया वह लाला दीन दयाल ने खींचा था। आज भी भारतवर्ष की पुरानी रियासतो के शाही महलो में यह ग्रुप फोटो देखने को मिलता है। लाला दीन दयाल ने भारत के कोने-कोने की यात्रा की तथा अनेक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलो तथा पर्यटक स्थलो में घूमे और 6000 से अधिक तस्वीरो की अंग्रेजी को संग्रहण किया जो उस समय का सब से बड़ा संग्रह था। इन के फोटोग्राफ 19 वी सदी के भारत की मनोहर निपुलता, सौम्य वैभव और गरिमापूर्ण आकर्षण की दुर्लभ सचित्र झाकियां प्रस्तुत करती हैं। उच्चकोटि के प्रतिष्ठत वर्ग के व्यक्तियो, नवाबो, राजा - महाराजो, शाही महलों, जैन मन्दिरो, अन्य धार्मिक स्थानो, शाही शिकार, जुलूसो, दरबारो आदि को अपनी तस्वीरों में उतार कर इन्हों ने उस दौर के स्वर्णिम क्षणों को सदा के लिए संजो लिया है।

इन के फोटोग्राफो की न केवल भारत में अपितु पूरे संसार में सराहना हुई। विदेशी पर्यटक जब भी भारतवर्ष की यात्रा पर आते तो बड़ी संख्या में इन की तस्वीरें देखने व अपनी फोटो खिचवाने के लिए इन के स्टूडियों में जरूर जाते। इन के बड़ी संख्या में खींचे हुए फोटोग्राफ, ग्लास पलेटस, तथा फोटोग्राफी के उपकरण नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में मौजूद हैं। इन के कुछ फोटोग्राफ अमेरिका तथा इंगलेड के संग्राहालयों में रखे हुए हैं। कुछ फोटोग्राफ निजी कला केन्द्रो, रंग महलो तथा संग्रहकर्ताओ के पास हैं। लाला दीन दयाल पर कई पुस्तके भारत तथा विदेशो में प्रकाशित हुई हैं। भारतवर्ष में फोटोग्राफरों के पितामह लाला दीन दयाल का 67 वर्ष की आयु में 5 जुलाई 1905 को बम्बई में निधन हो गया।

क्रमांक - 39

झवेरचंद कालिदास मेघाणी (जैन)

- सुरेश जैन

अधिकांश जैन लोग अपने नाम के साथ जैन शब्द नहीं लिखते अपितु केवल अपना गोत्र लिखते हैं जिस कारण बहुत बार ऐसा होता है कि व्यक्ति के धर्म के बारे में पता नहीं चलता इसी कारण श्री झवेर चंद के बारे में तथ्य बहुत देर से प्राप्त हुए। हमें श्री पोपटलाल हलपावत (जामखेड- ऐहमदनगर - गुजरात) से 16 मार्च 2013 को इस बारे में सूचना मिली कि झवेरचंद कालिदास मेघाणी जैन थे। मैं ने इन का नाम जैन व्यक्तित्व सूचि में लिख कर उन पर यह लेख प्रस्तुत किया है।

झवेरचंद मेघाणी का जन्म चोटिला टाऊन - जिला सुरेन्द्रनगर (गुजरात) में 28 अगस्त 1896 को हुआ था। इन के पिता का नाम कालिदास तथा माता का नाम डोलिमा मेघाणी था। पिता कालिदास पुलीस फोर्स में कार्यरत थे जिन का नई-नई जगह पर स्थानान्तरण होता रहता था जिस से झवेरचंद की पढ़ाई के ऊपर असर पड़ता था इस लिए पिता ने फैसला किया कि झवेरचंद की पढ़ाई को केवल राजकोट में जारी रखा जाये। इन्हों ने 1912 में मैट्रिक पास की तथा 1917 में बी. ए. पास की। यह बड़ा सादा जीवन जीते थे जिस की वजह से इन के कालेज के साथी इन को राजा जनक कहते थे, यह सदा सफेद धोती जो नीचे घुटनो तक लम्बी होती थी, ऊपर लम्बा कोट तथा आदर्श रूप से सिर पर बांधी हुई पगड़ी ही पहनते थे।

इन्हों ने अपनी जिन्दगी की शुरुआत 1918 में जीवनलाल ऐण्ड कम्पनी - कलकत्ता में निजि सहायक के तौर पर शुरु की तथा शीघ्र ही अपनी कर्तव्य निष्ठा तथा ईमानदारी के कारण इन को कम्पनी की फैक्ट्री कराऊन ऐल्युनियम - बेलूर में मैनेजर के पद पर नियुक्त कर दिया गया। वे 1919 में 4 महिने के

लिए इंगलेंड चले गये। भारत वापस आने के बाद इन्हों ने इसी कम्पनी में दाई वर्ष कार्य किया।

इस के पश्चात वापस सौराष्ट्र आगये इन्हों ने 1922 में "सप्ताहिक सौराष्ट्र" पत्रिका के सम्पादक बोर्ड में कार्य शुरू कर दिया और सारी जिन्दगी गुजराती भाषा में लिखना चाहे इन का बँगला और अंग्रेजी पर भी सम्यक अधिकार था। इस प्रकार उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जो जीविका की दृष्टि से कालांतर में उनका प्रमुख कार्य क्षेत्र बन गया। लोक साहित्य का अन्वेषण एंव अनुशीलन उनका मुख्यतम ध्येय था। उन्होंने लुप्त प्राय और उपेक्षित लोक साहित्य को पुनरुज्जीवन तथा प्रतिष्ठा प्रदान की। गुजराती उपन्यास व लुप्त लोक कथाओं को (जो इन्हों ने गाँव-गाँव में भ्रमण कर के इकट्ठी की थी) उन को लिखने से इन को बड़ी ख्याति प्राप्त हुई। झवेरचंद की रचनाओं में गांधीवादी प्रभाव से युक्त उत्कृष्ट देश प्रेम तथा स्वातंत्र्य भावना प्राय: सर्वत्र होती है, इन्हों ने एक पुस्तक सिंधुडा लिखी जिस में लिखी कविताओं के कारण भारत वर्ष के युवा वर्ग पर असर पड़ता था तथा युवक ब्रिटिश राज के विरुद्ध देश की आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने लगे थे। इस कारण अंग्रेज़ो ने झवेरचंद को 1930 में दो वर्ष कारावास का दंड दिया तथा इन की सिंधुडा नामक कृति को ज़ब्त कर लिया।

इन की रविन्द्र नाथ टेगोर से मित्रता थी इन्हों ने शाँती निकेतन में व्याख्यान दिये यह अपनी रचना गीत गाथा के लिए बड़े प्रसिद्ध हुए महात्मा गांधी ने इन को अपने आप राष्ट्रीय शायर की उपाधि दी थी इन्हों ने 100 से ऊपर पुस्तके लिखी। गुजरात के यह एक समाज सुधारक, स्वतंत्रा सेनानी, विख्यात कवि तथा महान साहित्यकार थे। लोक साहित्य और लोकगीतों से संबद्ध उन की प्राय: सभी कृतियाँ महत्ता रखती हैं, किन्तु "गुजरात नो जय" "सौराष्ट्र नी रसधार" तथा "रोढिया ली रात" सर्वश्रेष्ठ हैं। इन का 9 मार्च 1947 को 57 वर्ष की आयु में देहांत हो गया।

झवेरचंद कालिदास मेघाणी (जैन) पर डाकटिकट

14 सितम्बर 1999 को भारत सरकार के डाक विभाग ने 4 डाक टिकटों का एक सेट जारी किया था, जिस पर भारतवर्ष के चार भिन्न-भिन्न भाषाओं के महान लेखकों के चित्र छापे गये थे। इन को शीर्षक दिया गया था LINGUISTIC HARMONY OF INDIA. इन में एक डाक टिकट पर गुजराती लेखक व कवि श्री झवेरचंद कालिदास मेघाणी का चित्र छापा गया था। इस डाक टिकट को इण्डिया स्कयोरटी प्रेस द्वारा भारतीय लाल रँग, उल पीला रँग तथा हरे रँग को मिला कर 4 लाख संख्या में छापा गया था। डाक टिकट का मुल्य 300 पैसे है। इस डाक टिकट का विवरण इंगलेंड से छपने वाले स्टेनले गिब्बस के टालाग में SG नम्बर 1699 पर दिया गया है।